EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 11, Issue 2, July-December, 2022, Available online at: www.eduzonejournal.com

21वीं सदी के प्रथम दशक के महिला कहानी लेखन में पारिवारिक द्वंद्व

डॉ. सविता हुड्डा

सर छोटू राम राजकीय महिला महाविद्यालय सांपला (रोहतक)

परिचय

प्राचीन सामाजिक संस्थाओं में चूंकि परिवार का विशिष्ट स्थान है। परिवार को प्राचीन जीवन मूलभूत इकाई माना जाता है। परिवार के द्वारा ही मानव अपना उत्कर्ष करता है। परिवार के द्वारा ही समाज का निर्माण होता है तथा इसे नागरिक जीवन की प्रथम पाठशाला माना जाता है। इस प्रथम पाठशाला का प्रभाव मनुष्य जीवन पर जीवन पर्यन्त रहता है। किंतु बदलते समाज में पारिवारिक पाठशाला को कम महत्व दिया जा रहा है। जिसके कारण संबंधों में द्वंद्व उत्पन्न हो रहा है। इन द्वंद्वों के परिणामस्वरूप पारिवारिक संबंधों में कमजोरी आ रही है। परिवार के सदस्यों में विचारधारा के आधार पर मतभेद आरम्भ होकर संबंध विच्छेद करके खत्म होता है। इस द्वंद्व के उत्पन्न होने का मूल कारण पारिवारिक द्वंद्व होता है।

अल्पना मिश्र ने लिस्ट से बाहर कहानी के माध्यम से सास–बहुत के आपसी रिश्तों के द्वन्द्व को दर्शाया है। सास–बहु के रिश्तों में पुराने समय से ही रिश्तों में अहं, ईर्ष्या, द्वेष देखने को मिलता है। आज के युग में वह सास चाहती है कि बहु उसके अनुसार घर के रीति–रिवाज को अपनाए परंतु वह उसे बेटी कम बहु के रूप में देखती है अपना स्वामित्व बनाए रखना चाहती है इसी प्रकार बहु भी सास को मां कम, सास की तरह देखती है बहू चाहती है कि घर में सब काम उसके अनुसार से आपसी वैचारिक टकराव तथा अहंवादी सोच के कारण दोनों के रिश्तों में द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

'लिस्ट से बाहर' कहानी में नायिका घर का सारा काम करती है बच्चों, पति सास–ससुर देवर सबका ध्यान रखती है किंतु फिर भी उसे एक दासी की भाँति अपनी सास की प्रताड़ना व ताने सहन करने पड़ते हैं। नायिका की सास अपने पोते के जन्मदिन के 21वें दिन देवता की पूजा में ले जाने के लिए जब बाधित करती है तो बीमार होने के कारण नायिका जाने से इंकार कर देती है तो इस बात पर उसकी सास खरी–खोटी सुनाते हुए कहती है – "इन्हें छोड़ो.... कोई घर की परम्परा न मानें तो ईश्वर उसको दण्डित करेगा....। यह कहकर सास उसे धक्का देकर पोते को लेकर चली जाती है।"आज भी समाज में अनेक जगह सास–बहु के रिश्तों में अनबन व तनाव की स्थिति देखने को मिलती है। कभी सास तो कभी बहु के कारण आपसी विचारों में मतभेद इतना बढ़ गया है कि इसका परिणाम पूरे परिवार को उनकी द्वेष व वैर भावना के चलते झेलना पड़ता है। पहले भी यही मतभेद व द्वन्द्व देखने को मिलता था और आधुनिक समय में भी टकराव सास–बहु के रिश्तों में उनके विचारों को लेकर बना हुआ है।

समाज में परिवार में सास–बहु के रिश्तों के जैसे ही नन्द–भाभी के रिश्तों में भी द्वंद्व की स्थिति देखने को मिलती है। पंखुडी सिन्हा की कहानी संग्रह किस्से ए कोहिनर में "वीकेंड के स्पेस" कहानी में लेखिका ने नन्द, भाभी के बीच की रिश्तों की बढ़ती दरार को दर्शाया है। इस कहानी में 'रश्मि' एक आधुनिक स्वतंत्र कामकाजी नारी है। जिसका संबंध उसकी नन्द 'दोलन' से काफी सालों पहले टूट गया था। क्योंकि रश्मि की शादी के तुरंत बाद उसकी नन्द जिसे वह दोलन दी कहती थी अपने तौर तरीकों से चलाना चाहती थी। अपनी सोच उस पर थोपना चाहती थी कि वह घर की चारदीवारी में रह उसके अनुसार सब कार्य करे परंतु रश्मि इन विचारों का विरोध करती थी। इसलिए दोनों में हमेशा तना–तनी बनी रहती थी कुछ समय बाद जब रश्मि व उसका पति इन्द्रनील अलग फ्लेट में रहने लगे और जब इन्द्रनील ने अपने दोलन दी के बेटे को अपने घर लाने की बात कही तो रश्मि गुस्से से भर जाती है नील को कहती हैं जब मैं शादी करके इस घर में आई थी तो दोलन दी ने जाने क्या–क्या

कहा था। जब शादी के फौरन बाद दोलन दी इस घर के तौर तरीकों की फेहरिश्त मेरे सामने पेश कर रही थी, तुमने कितनी सफाई से कहा था। "हमें रश्मि को कनवर्ट करना है क्या दीदी?"

यही दृश्य आज भी देखने को मिलता है नन्द भाभी के रिश्तों में आज भी तनातनी का माहौल बना रहता है। किसी न किसी बात को लेकर दोनों अपने–अपने वर्चस्व को सही सिद्ध करने में लगी रहती है। यही स्थिति दोनों के रिश्तों में द्वन्द्व को जन्म देती है।

21वीं शताब्दी के आधुनिक परिवारों में व्यक्तिवादिता की भावना बड़ी ही तेजी से बढ़ रही है। मनुष्य आज अपने परिवार, माता–पिता, भाई–बहनों या अन्य निकट के रिश्तेदारों की चिन्ता नहीं करते हुए अपने ही स्वार्थों की पूर्ति में लगा रहता है। इसके कारण परिवारिक संबंधों पर कुप्रभाव पड़ा है। वर्तमान समय में परिवार के सदस्यों में उतना सहयोग व त्याग की भावना नहीं पायी जाती जितनी कुछ समय पूर्व तक पायी जाती थी। वर्तमान समय में परिवार की नियंत्रण शक्ति पहले की अपेक्षा काफी कम हो गयी है। भूमंडलीकरण के इस दौर में परिवार के बहुत से कार्य उससे समितियों ने छीन लिया है। पहले बालकों की शिक्षा का भार परिवार पर होता था परन्तु अब बालकों की शिक्षा का भार राज्यों ने ले लिया है।

इसी कारण बच्चों पर से परिवार की नियंत्रण शक्ति कम होती जा रही है। जैसे शिक्षा के संबंध में, विवाह के संबंध में, कैरियर निर्माण के संबंध में आदि। इसी के परिणामस्वरूप परिवार के संबंधों में कमजोरी होती जा रही है। वे स्थिर होते जा रहे है तथा द्वंद्व का शिकार हो रहे हैं।

इसके बावजूद भी यह नहीं कहा जा सकता कि परिवार का स्थान कोई और संस्था ले सकती है। मधु कॉकरिया ने अपनी कहानी 'बीतते हुए' में इन्द्रजीत और मणिदीपा के माध्यम से पारिवारिक संबंधों में बढ़ते हुए द्वंद्व को दर्शाया है।

मणिदीपा पन्द्रह वर्षों के बाद इन्द्रजीत को फोन करती है तो उसको अतीत के सारे पल जो इन्द्रजीत के साथ बिताए थे वो याद आ जाते हैं। मणिदीपा सामाजिक दवाब व पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण इन्द्रजीत से रिश्ता नहीं जोड़ पाती। ''भावनाओं का एक छोटा सा भरा सा बादल उठ रहा था भीतर, लेकिन मैं चुप। यही शायद वह क्षण था, जिसमें मेरा सम्पूर्ण विवेक, प्रज्ञा, संयम और दुनियादारी मेरे साथ थी। अब वह वेग का समय जीवन से निकल चुका था कि मैं तुम्हें समझ न पाई। तुमने जो दिया वह चाहे कितना भी थोड़ा क्यों न हो पर अब तक उसी ने संभाला हुआ है मुझे। विचारों की आग तो तुम्हीं ने सुलगाई थी, तुम साथ रहते तो कदाचित जीवन घट भरता। पूर्ण होता, पर बिना तुम्हारे तो मैं रीता घड़ा भर रह गई...।"

सुधा अरोड़ा ने अपनी कहानी 'दमन चक्र' के माध्यम से बताया है कि परिवार में पारिवारिक जरूरतों, जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए कैसे परिवार के सदस्यों के बीच आपसी लड़ाई–झगड़े व तनाव की स्थिति बनी रहती है। इस कहानी में चित्रित पात्र 'दामू' जिसकी चार बहनें है और घर में बीमार पिता है। दामू जो निकम्मा व निष्ठुर व्यक्ति है जिसका घर की जिम्मेदारियों के प्रति कोई मोह नही है वह अपने हिसाब से अपना जीवन आधुनिक तौर तरीकों से जीना चाहता है। वह परिवार की कोई भी आवश्यकता चाहे वह बहनों की शादी का खर्च हो या पढ़ाई का या बीमार पिता की दवाई का कोई भी उठाना नही चाहता। उसकी तीन बहनों ने अपनी मर्जी से शादी कर दहेज से परिवार को बचा लिया तथा चौथी बहन ने ही घर की सारी जिम्मेदारी उठा रखी है।

दामू सारा दिन यहा वहां चंदे के नाम पर लोगों से पैसा ऐठता रहता है। इसी कारण उसकी उसके पिता व बहन में आए दिन झगड़ा होता था। उसकी बहन कहती है। "सिर्फ मेरी कमाई से यह घर कितनी अच्छी तरह चल रहा है। शायद तुझे दिखाई नही देता। तुझे कमाकर हम सबको खिलाना चाहिए और तु मुझसे उल्टा पैसा मांग रहा है मेरे पास है रुपए, पर मैं दूंगी नही, उस क्लब को, जिसमें सब तेरे जैसे निक्मे, जाहिल, अडडेबाज लोग भरे पड़े हैं। या फिर उन रईसों के बेटे, जिनके पास बहुत सा काला पैसा है तुने अपनी जिन्दगी अपना उठना–बैठना सब

उनके नाम लिख दिया है अब क्या हमें भी ....।" इस बात पर दामू भड़क जाता है और वह अपनी बहन को घर से निकल जाने को कहता है।

इस प्रकार दामू और उसके पिता में भी वैचारिक मतभेद होने के कारण घर में हर रोज कलह की स्थिति बनी रहती है। दामू जैसे न जाने कितने ऐसे लड़के है जो पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुँह मोड़कर अपने अय्याशी, अपने नशे का निक्मेपन के साथ बड़ी शान से जीते हैं जिससे घर के वातावरण तनावमय हो जाता है और घर के आपसी रिश्तों में द्वन्द्व की स्थिति पैदा हो जाती है।

राजी सेठ की गमे हयात ने मारा कहानी में अन्तरजातीय विवाह संबंधी द्वन्द्व चन्नी व नरेन्द्र के प्रेम संबंधों के माध्यम से दर्शाया है। इस कहानी में चन्नी व नरेन्द्र दोनों से अलग–अलग जतियों से संबंध रखते हैं परंतु पारपरिक सोच के चलते नरेन्द्र के पिता इस विवाह के खिलाफ थे वे चाहते थे कि नरेन्द्र का विवाह उनकी इच्छानुसार उन्हीं की जाति में हो इसलिए वे इस विवाह से इंकार कर देते है। इस कारण बाप और बेटे में द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जब इसके पिता नही मानते तो चन्नी व नरेन्द्र आत्महत्या की कोशिश करते है जिसमें नरेन्द्र की मृत्यु हो जाती है। नरेन्द्र के पिता के अनुसार "अपनी खाल खिचवाकर बेटे के जूते सिलवा सकते थे। चौधरी, पर बनिया के बेटी के हाथ में सपूत का भविष्य नही सौंप सकते थे। प्यार होता है। होता रहे बछड़े मुँह मारते हैं मारते रहे यह सब तो राजसी मिजाज के लक्षण है।

नरेन्द्र की मृत्यु के बाद नरेन्द्र के पिता चन्नी के मां बाप को डराते घमकाते व मार पिटाई करते। वो शहर छोड़कर चले जाते है। ऐसे ही समाज में जातीय भेदभाव को लेकर न जाने कितने परिवार अपने बच्चों को मारते पीटते व कही–कही तो मौत के घाट भी उतार देते है। जिससे समाज में अराजकता की स्थिति पैदा होती है। यह द्वन्द्व समाज में वर्षो से चला आ रहा है शिक्षित होने के बाद भी समाज में आज भी यह समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

समाज में प्रेम विवाह को लेकर परिवारों में द्वन्द्व की स्थिति पहले की तरह आज भी बनी हुई है। माता–पिता चाहते है अपनी इच्छानुसार बच्चों को विवाह करना जबकि वे अपने जीवन में विवाह जैसा अहम् फैसला स्वयं ले इसी कारण प्रेम संबंधों का चलन पहलू की अपेक्षा आजकल बहुत बढ़ गया है। इसी कारण परिवार के बड़े बुजुर्गो के साथ प्रेम संबंधों को लेकर अक्सर लड़ाई झगड़े देखने को मिलते हैं। पंखुरी सिन्हा की 'सफर' कहानी में प्रेम संबंधों को लेकर इसी प्रकार द्वन्द्व दर्शाया गया है जिसमें पूर्वा नामक महिला अपनी बेटी के प्रेम संबंधों को लेकर ट्रेन में सफर करती दूसरी महिला को कहती है कि मेरी बेटी के साथ जिस लड़के का प्रेम संबंध था हमने उसकी शादी अपने बेटी के साथ करने से इंकार कर दिया तो उसने आत्महत्या कर ली। पूर्वा की बेटी उस लड़के से बेहद प्रेम करती थी किंतु परंपरावादी रूढ़िवादी सोच के कारण उसके प्रेम का गला घोट दिया गया। ट्रेन में सफर कर रही नायिका सोचती है कि "भारतीय परम्परा में माँए भले ही बेटियों की हत्या कर दें लेकिन ये कभी नहीं स्वीकारेंगी कि उन्होंने प्रेम किया।नायिका इस सोच का खंडन करते हुए कहती है कि यदि मेरी बेटी होती तो मैं अवश्य ही उसका विवाह इच्छानुसार कर देती। समाज में इसी प्रकार अनगिनत प्रेम संबंधों को लेकर परिवार में तनाव, क्लेश, द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न होती है।

सुधा अरोड़ा की कहानी 'तीसरी बेटी के नाम ये ठंडे शब्द झूठे, सूखे, बेजान' कहानी में भी 'सुनयना' नामक पात्र जो पढ़ने –लिखने में बहुत होशियार डिग्री मेडल लाने वाली बुद्धिमान लड़की है वह जब अपने मजहब से अलग व्यक्ति को प्रेम करने लगती है तब उसके माता–पिता उसको खूब मारते पीटते हैं और कहते है हमारी इच्छानुसार तुम सांस भी नही ले सकती तो विवाह तो दूर की बात है। 'सुनयना' इतना पढ़ने लिखने के बाद भी यह सोचती है कि उसने माता–पिता के लिए इतनी मेहनत कर उनका नाम रोशन किया और अब वह अपनी इच्छा से विवाह भी नही कर सकती।

आज भी हमारे समाज में कई ऐसे परिवार हैं जो दूसरे धर्म व जाति में विवाह करना अपनी शान व प्रतिष्ठा के खिलाफ मानते है। ऐसे ही चुन्नी व सुनयना के साथ हुआ। इन्हीं कारणों से पुरानी सोच के कारण समाज में विवाह संस्था को लेकर द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न होती है।

वर्तमान समय में विवाह संस्था परम्परा और आधुनिकता के द्वंद्व के बीच खड़ी है, जहाँ से दो रास्ते निकलते एक तो शिक्षित युवक–युवतियाँ विवाह के प्रति अपना आधुनिक दृष्टिकोण रखते हैं, वही दूसरा रास्ता परम्परागत जो विवाह के प्रति अपने परम्परावादी विचारों से संतुष्ट है। 21वीं शताब्दी के कुछ पहले से वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, पश्चिमी औधोगिकरण, नगरीकरण, पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति तथा सहशिक्षा ने विवाह संस्था को बहुत अधिक प्रभावित किया है। वर्तमान समय में मोबाइल के बढ़ते प्रभाव, इंटरनेट एवं सोशल साइटस भी युवाओं में परम्परागत विवाह पद्वति के विषय में द्वंद्व उत्पन्न करती है।

अतः इन लेखिकाओं ने समाज में चित्रित सामाजिक परिस्थितियां के अंतर्गत पारिवारिक, सास बहू, नन्द भाभी, पारंपरिक जिम्मेदारियों को लेकर, सयुक्त एवं एकल परिवार में, दाम्पत्य सम्बन्धों और वैवाहिक अवधारणा संबंधित समस्याओं को अपने साहित्य का माध्यम बनाया है।21वीं सदी की महिला कहानी लेखिकाओं की कहानियों में हम देखते हैं कि पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच में उनके कामकाज, शिक्षा को लेकर, घर में रहने की समस्या को लेकर आपसी भाइयों और पिता पुत्र में द्वंद्व उत्पन्न हो जाता है। एक भाई मिल जुल कर रहना चाहता है तो दूसरा भाई अपने परिवार के साथ अलग रहना चाहता है। जो यह छोटे परिवार और बड़े परिवार के बीच दरार डालने का कार्य करता है। सास और बहू की आपसी समझ नहीं मिलने पाने के कारण भी परिवार में द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

अतः यह कहना उचित होगा कि जहां हमारे समाज की परिधि बहुत बड़ी विशाल और विस्तृत रूप धारण किए हुए हैं, वही कहीं न कहीं समाज की सोच कहीं छोटी तो कहीं स्वछंद नजर आती है। भारतीय समाज में पारिवारिक एक साथ रहने की परम्परा तो वर्षों से चली आ रही है और एक ही परिवार में तीन से भी अधिक पीढ़ियाँ निवास करती आई हैं।

लेकिन आज मनुष्य के जीवन में बहुत सारे भौतिक संसाधनों ने घर कर लिया है जिसके कारण वह अकेला जीवन जीना पसंद करता है और उसका परिवार में किसी न किसी के साथ टकराहट की स्थिति उत्पन्न होती है। जिसके कारण सयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं । जहां नारी घर की चारदीवारी से निकलकर अपना कार्य करना चाहती है तो दूसरी ओर उसके ऊपर बहुत सारे सामाजिक बंधन लग जाते हैं जिसके कारण भी द्वंद की स्थिति उत्पन्न होती है। पहले समय में प्रेम विवाह को मान्यता प्रदान न थी लेकिन आजकल बहुत सारे विवाह प्रेम विवाह ही होते हैं जिसके कारण भी आपसी मतभेद देखने को मिलते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि सौ वर्षों की तुलना में मनुष्य आज ज्यादा शिक्षित एवं गंभीर हो गया है वह अपनी सुख सुविधाओं की जिंदगी में बहुत सारे मानसिक द्वंद्वों से गुजरता है जिसके फलस्वरूप अकेला और कुंठा ग्रस्त भी हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अल्पना मिश्र, छावनी में बेघर, पृ0 9,10
2. पंखुरी सिन्हा, किस्सा ए कोहिनूर, पृ0 23
3. मधु कांकरियां, बीतते हुए, पृ0 69
4. सुधा अरोड़ा, काला शुक्रवार, पृ0 72
5. राजी सेठ, गमे हयात ने मारा, पृ0 17
6. पंखुरी सिन्हा, किस्सा ए कोहिनूर, पृ0 132